# चुने हुए
## ( 1:3, 4 )

कुछ समय पहले फ़्लोरिडा राज्य के वैस्ट पाम बीच में एक 71 वर्षीय महिला की मौत हो गई। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में उसके मरने का कारण कुपोषण बताया गया। मरने के समय उस महिला का वज़न केवल पचास पौंड (लगभग बीस किलो) था।

ऐसा लगता था कि उसे जीवन में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा था। जब अधिकारियों ने उसके घर जाकर देखा तो उन्हें वहां गंदगी ही गंदगी मिली। पड़ोसियों से पता चला कि वह खाने के लिए अक्सर भीख मांगा करती थी। उसे कपड़े भी किसी दानी संस्था द्वारा दिए गए थे। ऐसा लगता था जैसे किसी दरिद्र महिला ने अपनी कठिन जीवन यात्रा पूरी कर ली हो।

कबाड़ बन चुके उसके घर की तलाशी लेने पर पुलिस को दो कुंजियां मिलीं। दोनों कुंजियां दो स्थानीय बैंकों के लॉकरों की थीं। एक लॉकर खोलने पर अधिकारियों को सात सौ मूल्यवान स्टॉक सर्टिफिकेट और सिक्योरिटियों (प्रतिभूतियों) के अलावा लगभग 2,00,000 डॉलर की राशि मिली। दूसरे लॉकर में 6,00,000 डॉलर पड़े थे। वह महिला खाने के लिए भीख मांगती थी, कपड़े मांगकर पहनती थी और उसकी मृत्यु कुपोषण से हुई थी, फिर भी उसकी सम्पत्ति 10,00,000 डॉलर से अधिक आंकी गई![1]

पौलुस ने इफिसियों की पत्री उन मसीही लोगों के नाम लिखी जो अपने अपार आत्मिक संसाधनों के साथ वैसा ही कर रहे थे जैसा अपने भौतिक संसाधनों के साथ फ़्लोरिडा की इस महिला ने किया था अर्थात वे उनका सही इस्तेमाल नहीं कर पा रहे थे। आज भी मसीही लोग वही गलती कर सकते हैं। मसीह में हमें अपार धन मिला है और किसी मसीही को कुपोषण से मरने की आवश्यकता नहीं है अर्थात उसे धन को व्यर्थ नहीं करना चाहिए। केवल उसका जो परमेश्वर ने हमें दिया है, सही ढंग से इस्तेमाल करना चाहिए।

इफिसियों की पत्री परमेश्वर के स्वर्गीय भंडारों के असीमित होने की पुष्टि करती है। यह दिखाती है कि मसीही लोगों को आत्मिक रूप से लाचार होने की आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर की संतान होने के कारण, हमें ऐसे संसाधन उपलब्ध कराए गए हैं, जिनसे हम परमेश्वर में अविश्वसनीय ढंग से धनी हो सकते हैं। पौलुस ने इन्हें ''उसके अनुग्रह का'' वह धन कहा ''जिसे उस ने सारे ज्ञान और समझ सहित हम पर बहुतायत से लागू किया'' है (1:7ख, 8)।

इफिसियों 1:3-14 मसीही लोगों के लिए परमेश्वर के धन की खोज पर सुई रखता है।

मूल यूनानी भाषा में, आयत 3 से 14 केवल एक ही अर्थात विस्तृत वाज़्य बनाता है। यह भूत (पद 3-6क), वर्तमान (पद 6ख-11), और भविष्य (पद 12-14) को दायरे में लेते हुए, परमेश्वर की महिमा का एक विजयी धमाका करता है।

आइए महिमा की पौलुस की उल्लासजनक दो आयतों पर ध्यान देते हैं:

> हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उस ने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है। जैसा उस ने हमें जगत की उत्पज़ि से पहिले उस में चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों (1:3, 4)।

पवित्र शास्त्र एक समय रहित सच्चाई को ठहरा देता है कि *परमेश्वर उन लोगों को जो मसीह में हैं, हर सज़्भव आत्मिक आशीष देता है।* मसीह में आप के पास ज़्या है? आपके पास परमेश्वर का दिया हुआ सब कुछ है!

## परमेश्वर हमें आशिषें अपनी पसन्द से देता है

पौलुस के शज़्दों में मसीही लोगों से परमेश्वर की महिमा करने को कहा गया है: ''हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उस ने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है। जैसा उस ने हमें जगत की उत्पज़ि से पहिले उस में *चुन लिया,* ...'' (आयतें 3, 4क)। पृथ्वी के अस्तित्व में आने से भी पहले, परमेश्वर ने अपने प्रेम और धन को जो मूलत: ''स्वर्गीय स्थानों में'' था, मसीही लोगों के साथ बांटने की इच्छा की। परमेश्वर अपने स्वभाव के कारण दूसरों पर अपना प्रेम व्यज़्त करने और उनके साथ अपने धन को बांटने का इच्छुक है।

परमेश्वर ने स्वेच्छा से अपने स्वरूप पर पुत्र और पुत्रियां बनाने का विचार किया। उसने उन्हें उसके साथ रहते हुए, उससे प्रेम करते हुए, उसके घर में रहते हुए और उसके नाम की महिमा करते हुए आनन्द करने की क्षमता दी। डज़्ल्यू. फिलिप कैलर की व्याज़्या हमें परमेश्वर की उस प्रतिक्रिया की कल्पना करने में सहायता करती है, जब उसने सर्वप्रथम स्वर्गीय स्थानों में अपनी योजना प्रकट की:

> जहां तक हम मनुष्य जान सकते हैं, परमेश्वर के सभागृहों में बनाया गया यह सबसे दुस्साहसी विचारों में से एक होगा। और हम आश्वस्त हो सकते हैं कि जब यह योजना प्रकट की गई तो अनन्त काल तक उज़ेजना की लहर फैल गई थी। किसी स्वर्गदूत या सेवा करने वाले किसी दूसरे आत्मा के ऐसी जबर्दस्त योजना स्वप्न में भी नहीं आई होगी।
>
> परमेश्वर ने अपनी नकल बनाने की ठान ली। उसने दूसरों को अपने जैसा बनाकर उन्हें पुत्र बनाना था।

वह अपने स्वभाव पर बनाए गए स्वेच्छा प्राप्त जीवों के साथ अपने स्वर्गीय घर को भरने को उत्सुक था।

वे जिन्हें अनन्तकाल का आनन्द मिलना था, मसीह अर्थात उसके पुत्र के साथ वारिस और संगी वारिस होने थे।

परमेश्वर पुत्र के लिए यह विचार बड़ा रोमांचकारी रहा होगा। अब उसके भाई और बहनें होनी थीं, जिनके साथ वह अनन्तकाल का आनन्द मना सकता था। अब उसने एकलौता पुत्र नहीं होना था। यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। इस कार्य को पूरा करने की जिम्मेदारी उसी पर होनी थी।[3]

परमेश्वर ने स्वेच्छा से हमें पुत्र और पुत्रियां बनाना चुना। इस विचार का कि परमेश्वर ने हमें मसीह में अपनी संतान होना चुना, हमें क्या लाभ है ?

*हम थोड़े में राज़ी हो सकते हैं।* हो सकता है कि हम इस भावना को कि परमेश्वर हमें अपनी संतान बनाना चाहता है, कम महत्व दें। वास्तव में, अधिकतर लोग ऐसा ही करते हैं। लेखक सी. एस. लुइस ने ऐसा ही किया था। कई वर्ष तक वह अपने आप को नास्तिक मानता रहा। इस गोरे प्रोफेसर के जीवन में परमेश्वर के लिए कोई जगह नहीं थी। बुढ़ापे में उसका मन परिवर्तन हो गया। अब वह एक विश्वासी बन गया, जो किसी ऐसे व्यक्ति के परिप्रेक्ष्य से लिख सकता था जो थोड़े में मान गया हो:

झुग्गियों में रहने वाले एक नासमझ बच्चे की तरह जो मिट्टी के ढेले बनाना चाहता है क्योंकि वह समुद्र में छुट्टियों का मज़ा लेने की पेशकश के अर्थ की कल्पना नहीं कर सकता, हम सदा काल के आनन्द की पेशकश मिलने पर अपने आप को शराब, सैक्स और अभिलाषा से मूर्ख बनाकर उनमें कम उत्साह दिखाते हैं। हम बड़ी आसानी से मान जाते हैं।[4]

परमेश्वर ऐसे पुत्र और पुत्रियां चाहता है, जिनके लिए वह स्वर्ग की खिड़कियां खोल सके। हमें अपनी पसन्द चुनने के लिए कहा जाता है; परन्तु हो सकता है कि हम इससे थोड़े में भी मान जाएं। अधिकतर लोग ऐसा ही करते हैं।

*दूसरी ओर, हम परमेश्वर की उत्तम वस्तु को ग्रहण कर सकते हैं।* गोद लेने और अपनी संतान बनाने का उसका उद्देश्य, हमें अपने धन के वारिस बनाना, हम में अपने स्वरूप को उजागर करना, और हमेशा के लिए स्वर्ग में अपने साथ रखना है।

ज़रा विचार करें, आप अपने आप को कहां पर पाते हैं ? क्या आप थोड़ा लेकर मान रहे हैं ? क्या आप अपनी संतान बनाने और स्वर्ग के धन देने की परमेश्वर की पसन्द से चकित होते हैं ? क्या आप नहीं चाहते कि आपका जीवन उसकी पसन्द के अनुसार हो ?

## परमेश्वर हमें अपनी आशिषें अपने ढंग से ही देता है

परमेश्वर हर आत्मिक आशीष हमें ''मसीह में'' ही देता है। इफिसियों की पुस्तक में

''मसीह में''[5] या इसके जैसा वाक्यांश बीस से अधिक बार मिलता है। पौलुस ने इन प्रारम्भिक आयतों का काफ़ी इस्तेमाल किया है:

विश्वास करने वाले मसीह में हैं (आयत 1)।
हर आत्मिक आशीष मसीह में है (आयत 3)।
हम मसीह में पवित्र और निर्दोष हैं (आयत 4)।
मसीह में अनुग्रह सेंत मेंत दिया जाता है (आयत 6)।
छुटकारा और पापों से क्षमा मसीह में है (आयत 7)।
चुने हुए लोग मसीह में हैं (आयत 9)।
हम पर मसीह में मीरास पाने के आश्वासन के लिए पवित्र आत्मा की मुहर या छाप लगी है (आयत 13)।

इन पुष्टियों से मसीह में होने के महत्व का संकेत मिलता है। इसे किसी दूसरी चीज़ से तुलना करने के लिए भी, जिसे हम जानते हैं कि इसका मसीह में होना सराहनीय काम हो सकता है ''मसीह में'' की जगह ''परिवार में'' लिखें। परिवार में आप या तो जन्म से, विवाह करके या गोद लेने के कारण होते हैं, इसका क्या अर्थ होता है?

''परिवार में'' आपको कुछ विशेष अधिकार मिलते हैं। अपने घर में प्रवेश करने पर कोई मुझसे नहीं पूछता, ''तुम्हें अन्दर किसने आने दिया?'' मेरी पत्नी, सैली, मुझे घुसपैठिया समझकर मेरे साथ अजनबी जैसा व्यवहार नहीं करती। मेरा बेटा मुझे दरवाज़े से बाहर धकेलने की कोशिश नहीं करता। मेरी बेटी पुलिस को नहीं बुलाती। वे सभी जानते हैं कि मैं उनके घर का आदमी हूं क्योंकि मैं उस परिवार का सदस्य हूं। विशेष अधिकार, ज़िम्मेदारियां, और अपेक्षाएं सब परिवार में रहने पर मिलती ही हैं।

''मसीह में'' होने का अर्थ है कि आपका सम्बन्ध उससे है। आपको उसके साथ मिलाया गया है। मसीह में होने के सभी विशेषाधिकार, ज़िम्मेदारियां और अपेक्षाएं आपकी हो गई हैं। परमेश्वर द्वारा अपने स्वर्ग में किसी स्थान पर आपको जगह देने पर स्वर्ग के बरामदों में किसी प्रकार का कोई स्तम्भ करने वाला संकेत नहीं गूंजता। वहां पर जगह तो आपको मसीह में होने से ही मिलती है। स्वर्गदूत यह देखकर मूर्छित नहीं होते कि परमेश्वर ने आप में अपना आत्मा क्यों भेजा है। यह तो मसीह में होने पर आपको मिलना ही था। कोई इस पर आपत्ति नहीं करता कि परमेश्वर आपके सब पापों को क्षमा क्यों करता है। यह तो मसीह में होने पर होना ही था।

पृथ्वी पर के इस जीवन के पश्चात, कोई स्वर्गीय जीव चकित नहीं होगा कि आपको परमेश्वर के अनन्त निवास में जगह क्यों दी गई है। क्योंकि मसीह में होने से यह होना तो आवश्यक है। मसीह में आपको पापों की क्षमा मिलती है, परमेश्वर की संतान होने पर, पवित्र आत्मा का दान, अनन्त जीवन की आशा, पवित्रता, धार्मिकता, भलाई, महिमा, सामर्थ, स्थिरता, शांति और संसार में परमेश्वर का सारा धन आपको मिलता है। ये सभी आशीषें अचंभित करने वाली लगती हैं, हैं न? मसीह में आने वाले किसी व्यक्ति के लिए ये

सब बातें हैं!

यदि मसीह में मुझे इतना सब कुछ मिलता है, तो कभी-कभी मैं अपने आप को दोषी ज़्यों मानता हूं? मैं अपने आप को पवित्र, धर्मी या भला व्यक्ति ज़्यों नहीं मानता? मैं कुछ बातों में इतना निर्बल ज़्यों हूं? मैं अभी भी पाप में ज़्यों हूं? पवित्र शास्त्र कहता है कि मैं परमेश्वर की संतान हूं, परन्तु निश्चित रूप से मैं हर समय ऐसा व्यवहार नहीं करता जैसा मुझे करना चाहिए। आम तौर पर मैं ''अपने आप'' को प्राथमिकता देता हूं। मैं अपने आप को आगे और दूसरों को पीछे रखता हूं।

हाल ही में, मैंने कई लोगों के साथ एक समूह में बाइबल अध्ययन किया। हमने अपने बारे में इन प्रश्नों और विचारों को व्यक्त किया। अन्त में हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि बहुत से मसीही लोग इसी विचार से जूझ रहे हैं: ''मेरी अवश्य कोई गलती होगी। मैं मसीहियत को दूसरों के लिए सेवा करने वाले धर्म के रूप में देखता हूं, परन्तु प्रभु के साथ मेरा चाल चलन इससे मेल नहीं खाता।''

बहुत से मसीही लोग, जिनमें ऐल्डर, माता-पिता और वर्षों से मसीही बने लोग भी शामिल हैं, अपने आप से ऐसे प्रश्न पूछते हैं। ऐसे विचार को आरम्भ करने के लिए दो विचार सहायक होते हैं।

*बुनियादी बातों में जाएं।* अपने परिचय को फिर से दोहराना चाहिए कि मैं परमेश्वर की संतान हूं। परमेश्वर ने यीशु के द्वारा मुझे अपनी संतान बनाया है। यही तो वह बताना चाहता है। फिर, मुझे अपने आप में यह दोहराना चाहिए कि मैं ''मसीह में'' हूं। गलतियों 3:26, 27 कहता है, ''ज़्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की संतान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है, उन्होंने मसीह को पहन लिया है।'' मुख्य बात तो यही है। यदि मैं मसीह में विश्वास करके मसीह में बपतिस्मा लेकर मसीह में हूं, तो मुझे हर आत्मिक आशीष मिलेगी!

*बुनियादी बातों का इस्तेमाल करना।* अपने आप से निराश होने पर, मैं अक्सर बुनियादी बातों की अवहेलना करने की निराशा को देखता हूं। फ़्लोरिडा की उस ''कंगाल'' स्त्री की तरह, मैंने अपनी सम्पत्ति का इस्तेमाल नहीं किया है, जिस कारण आत्मिक भुखमरी का शिकार हूं। बुनियादी बात में आवश्यक है (1) परमेश्वर का वचन-इसका अध्ययन करना व इसे याद करना और इस पर मनन करना; (2) प्रार्थना-परमेश्वर के साथ निरन्तर सम्बन्ध बनाए रखना; (3) सेवा-राज्य के काम में निजी तौर पर योगदान देना; और (4) संगति- साथी मसीहियों के साथ संगति।

हां, मुझे और आपको चाहिए कि समय-समय पर अपने आप को याद दिलाते रहें कि हम कौन हैं। निराश होने पर, अपने आप को सुनिश्चित करने के लिए कि हम वास्तव में कौन हैं 1:3-14 आयत का इस्तेमाल कर सकते हैं। क्या आप अभी इसका इस्तेमाल करेंगे? अपने आप को याद दिलाते रहें कि आप कौन हैं? अपने आप से कहें, ''मैं परमेश्वर का चुना हुआ हूं। मैं उसके सामने पवित्र और निर्दोष हूं। मैं छुटकारा पाया हुआ हूं। मैं मसीह के लहू से छुड़ाया हुआ हूं। मैं पवित्र आत्मा पाया हुआ हूं। मुझे अनन्त मीरास मिलने वाली है,

ज़्योंकि मैं *मसीह में* हूं!''

## सारांश

हैटी ग्रीन को अमेरिका की सबसे मशहूर कंजूस महिला माना जाता था। 1916 में अपने पीछे वह 10 करोड़ डॉलर की सज़्पज़ि छोड़ गई; परन्तु उसने कभी अपने संसाधनों का इस्तेमाल नहीं किया। वह नाश्ते के लिए भी जई के ठण्डे सज़ू लाने के लिए कहती थी ताकि वह पानी गर्म करने के लिए ईंधन के पैसे बचा सके। अपने बेटे की टांग पर गहरा घाव होने पर हैटी ने उसके उपचार के लिए तब तक प्रतीक्षा की जब तक उसे एक नि:शुल्क ज़्लिनिक नहीं मिल गया। जिसका नतीजा यह हुआ कि उसके लड़के को अपनी टांग गंवानी पड़ी। हैटी का जीवन मूर्खता से भरा था। कंजूसी के कारण वह अपनी सज़्पज़ि का उचित इस्तेमाल नहीं कर पाई।[6]

मसीह में परमेश्वर की पेशकश को देखकर उसे इस्तेमाल न कर पाना भी उतना ही मूर्खतापूर्ण है! परमेश्वर हमें हर आत्मिक आशीष देना चाहता है। इस पेशकश को न ठुकराएं।

---

टिप्पणियां

[1]चार्ल्स आर. स्विंडॉल, इज़्प्रूविंग योअर सर्व: द आर्ट ऑफ़ अनसेल्फिश लिविंग (वैको, टैज़्स.: वर्ड बुज़्स, 1981), 49-50. [2]''चुनना'' के लिए यूनानी शज़्द *eklego* है। इसका अर्थ ''चयन करना, चुनकर निकालना'' है। मध्य स्वर परमेश्वर द्वारा अपने लिए की गई किसी बात का संकेत है। [3]डज़्ल्यू. फिलिप कैलर, *रज़्बोनी ... विच इज़ टू सेअ मास्टर* (ओल्ड टैपन, न्यू ज.: ज़्लेमिंग एच. रेवल कं., 1977), 17-18. [4]सी. एस. लुइस, मैज़्स ऐंडर्स, द *गुड लाइफ: लिविंग विद मीनिंग इन ए ''नैवर-इनफ'' वर्ल्ड* (डैलस: वर्ड पज़्लिशिंग, 1993), 17 में उद्धृत। [5]ऍडी ज़्लोर: *''कलीसिया'' के लिए परमेश्वर का नमूना* के परिशिष्ट 3 में ''मसीह में'' वाज़्यांश देखें। [6]जॉन मेकार्थर, जूनी, इफिसियंस, द मेकार्थर न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री (शिकागो, इलिनोइस: मूडी प्रैस, 1986), vii.